P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रेमचन्द साहित्य की पूर्ण आलोच कथा–रामबक्ष की पुस्तक–प्रेमचंद और भारतीय किसान

सारांश

रामबक्ष ने प्रेमचंद और भारतीय किसान में प्रेमचंद की रचना धर्मिता का तत्वकालीन सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों का प्रेमचंद पर प्रभाव और उनकी रचना दृष्टि का सम्यक विवेचन किया है। और प्रेमचंद की ओजस्वी चेतना के आधारों की पड़ताल की है। और बताया है कि प्रेमचंद का साहित्य जनतांत्रिक भावबोध पर टिका हुआ है।

मुख्य शब्द : प्रेमचंद, किसान, हिन्दी साहित्य।

नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
आई0 टी0 पी0 जी0 कालेज,
लखनऊ

प्रस्तावना

''प्रेमचंद अपने सर्जनात्मक साहित्य में भी अपने विचारों का प्रचार करते रहे है। उनकी रचनाओं का उद्देश्य प्रजातांत्रिक भारत की स्थापना करना रहा है, इसलिए उन्होंने एक तरफ साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष किया है, दूसरी तरफ सामंतवादी सामाजिक परंपराओं पर भी चोट की है। वैसे कई बार प्रेमचंद किसी एक का सहारा लेकर भी दूसरे का विरोध कर देते हैं।'' (प्रेमचंद और भारतीय किसान–प्रो0 रामबक्ष, पृ0 97)

प्राध्यापकों–शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए रामबक्ष की पुस्तक 'प्रेमचंद और भारतीय किसान' एक मुकम्मल संदर्भ ग्रंथ है। प्रेमचंद के समग्र साहित्य में भारतीय किसान के सरोकारों का इतना व्यापक और विचारोत्तेजक पड़ताल एक बड़ी उपलब्धि है। विवेचना जितनी ही सहज भाषा में है, किंचित भारतीय किसान के संश्लिष्ट जीवन के रचाव–बसाव की खोज के उपक्रम में यह पुस्तक उतने ही सवाल–जवाब छोड़ती है और इसी सिलसिलें में प्रेमचंद के समय साहित्य के मूल्यांकन के लिए नई ऊर्जा भी देती है।

पुस्तक में साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद और सामाजिक वर्ग के रूप में किसान की भूमिका की सम्यक एवं संतुलित विवेचना की गयी है। बीसवीं शताब्दी में भारत की राष्ट्रीय राजनीति में किसानों की पुरजोर भूमिका रही और उस भूमिका के सापेक्ष तत्कालीन बुद्धिजीवियों का जो चिन्तन रहा उसे प्रेमचंद की युगीन दृष्टि ने पहचाना और उस सांस्कृतिक वातावरण में एक नए स्वरूप को अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रस्तुत पुस्तक प्रेमचंद की नजरों से किसानों की परिस्थितियाँ, विद्यमान चेतना, स्वाभाविकगुण, समाज व्यवस्था, सांस्कृतिक दृष्टि, घर–गृहस्थी, मान, प्रतिष्ठा, लोक–लाज, आस्था–विद्रोह, असुरक्षा एंव पीड़ा सहित जीवन के सभी पहलुओं का अनुसंधान करती है। सबसे बड़ी बात है कि लेखक ने व्यापक ऐतिहासिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद को समग्रता में देखने–दिखाने की कोशिश की है, उदाहरण के लिए लेखक प्रेमचंद के यहाँ किसानों का महाजनों द्वारा या पुरोहितों, जमीदारों, द्वारा शोषण या अन्य मुद्दों को दिखाने के उपक्रम में उनके उपन्यासों को खँगालने के साथ–साथ उनकी कहानियों और वैचारिक साहित्य को भी खँगालता है।

अध्ययन का उद्देश्य

लेखक रामबक्ष जी की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थापना है कि ''अपनी जीवन दृष्टि से ही उन्होंने समाज में किसानों के महत्व और उनकी भूमिका को समझा।'' इसी कारण किसानों के जीवन–यथार्थ को उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया।'' समाज में जिसका सबसे ज्यादा शोषण किसानों का ही हुआ लेकिन असमर्थता और संगठन से शोषणकारी ताकतों के विरूद्ध उनकी घृणा मुखर नहीं हो पाती और वह विनयशीलता के आवरण में दबी रहती है। प्रेमचंद ने इस आवरण को हटा दिया और इस तरह करोड़ों–करोड़ मूक भारतीय किसानों की भावनाओं को वाणी दी तथा समाज के शोषकों के प्रति किसानों की इस घृणा को प्रकट कर दिया'। लेखक का यह निर्भान्त निष्कर्ष काबिलेगौर है। 'प्रेमचंद और भारतीय किसान' पुस्तक में सटीक मूल्यांकन करते हुए रामबक्ष लिखते हैं, ''प्रेमचन्द के साहित्य से भारतीय किसान अपने शोषकों को ज्यादा

अच्छी तरह से पहचान सकता है और उसके शोषण तथा हथकंडों को जानकर उनसे बचने के उपाय भी ढूँढ सकता है। प्रेमचंद–साहित्य से आज का किसान अपने अतीत को झाँककर देख सकता है। .... किसानों के प्रति दया भाव तो अब तक अनेक रचनाकारों ने व्यक्त किया है, लेकिन उनके प्रतिनिधि बनकर बोलने वाले हिन्दी के पहले रचनाकार प्रेमचंद ही हुए।''

प्रस्तुत पुस्तक आठ अध्यायों में विभाजित है–'पथ सन्धान और किसानों के महत्व की पहचान, सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधों केउद्घाटन का प्रयास, चिन्तन की परिपक्वता और स्वाधीनता आन्दोलन में किसानों की भूमिका, सर्जनात्मक उत्कर्ष और किसान, जीवन की जटिलता में अंतःप्रवेश, प्रेमचंद के साहित्य में किसानों के आर्थिक शोषण की प्रक्रिया, प्रेमचंद के साहित्य में किसानों का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन, प्रेमचंद की जीवन–दृष्टि और उपसंहार। 'पुस्तक शोध–प्रबंध का किंचित् संशोधित रूप हैं लेखक के अनुसार उसने इसमें नए तथ्यों की खोज का प्रयास नहीं किया है लेकिन उसकी रूचि उपलब्ध तथ्यों के नए विश्लेषण की ओर ही रही है। किन्तु विद्वान लेखक ने 'नए विश्लेषण' से अनेक नवीन तथ्य एवं स्थापनाएँ दी है।

'पथ सन्धान और किसानों के महत्व की पहचान' शीर्षक अध्याय में 1900 से 1919 तक का समय लिया गया है। रामबक्ष के अनुसार 'प्रेमचंद की रचनाएँ 1903 से मिलती है। अतः यहीं से प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन की शुरूआत माननी चाहिए। 1900 से 1919 तक के इस कालखण्ड की पड़ताल करते हुए प्रो0 रामबक्ष ने प्रेमचंद के बचपन के परिवेश के बाद अंग्रेजी राज्य में किसान, कांग्रेस की स्थापना के समय के परिवेश, राष्ट्रीय राजनीति और प्रेमचंद की रचनाओं की विवेचना की है–''टूटे–फूटे फूस के झोपड़े, मिट्टी की दीवारें, घरों के सामने कूड़े करकट के बड़े–बड़े ढेर, कीचड़ में लिपटी हुई भैंस, दुर्बल गायें ये सब सोचनीय दशा है। हड्डियाँ निकली हुई हैं, वे विपत्ति की मूर्तियाँ और दरिद्रता के जीवित चित्र हैं।'' (वरदान) लेखक का निष्कर्ष है कि यहाँ प्रेमचंद की मूल संवेदना दर्शक की सहानुभूति की है, भोक्ता के दर्द की नहीं।''

भारत की राष्ट्रीय राजनीति में किसानों का प्रवेश गाँधी जी के साथ हुआ। विपिन चन्द्रा लिखते हैं–1900 में वायसराय लार्ड कर्जन ने घोषणा की ''कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है। भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद दे सकूँ।''अधिकांश अंग्रेज कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य ''राजनीतिक दृष्टि से प्रबुद्ध कुछ गिने–चुने भारतीयों के बीच सैद्धान्तिक बहस–मुबाहिसा चलाने तक सीमित रखना समझ रहे थे'' लेकिन उसी कांग्रेस के मंच से 1915 में किसानों के असंतोष का पता लगाने के लिए गाँधी जी विहार गए! 1918 में खेड़ा में लगानबन्दी आन्दोलन चलाया। राष्ट्रीय राजनीति में किसानों की जागरूकता के उद्देश्य से यह पहला कदम था। पथ सन्धान की समयाविधि (1900–1918) में लेखक के अनुसार ''किसानों के क्रांतिकारी स्वरूप से अब तक प्रेमचंद परिचित नहीं थे हालांकि दूसरे वर्गों की नपुंसकता का उन्हें एहसास हो गया था, पर किसानों पर पक्की आस्था नहीं जम पायी थी। किसानों की संगठन शक्ति से भी वे अनभिज्ञ थे–अंतः स्वाधीनता आंदोलन में किसानों की भूमिका निर्णायक है, इस निष्कर्ष तक नहीं पहुँचे थे। कुल मिलाकर इस बीच का साहित्य किसानों के प्रति दया ओर ममता भाव से भरा हुआ है.... जमींदारों के अत्याचार का कारण जमींदारी व्यवस्था के भीतर न बताकर जमींदारी व्यवस्था की अराजकता को बताया गया है।''

''सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधो के उद्घाटन का प्रयास'' शीर्षक अध्याय में 1919 से 1929 तक के ऐतिहासिक कालखण्ड को समेटा गया है। उल्लेखनीय है कि विश्व इतिहास में यह समय प्रथम विश्व युद्ध और रूसी क्रांति जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी है। भारतवर्ष के इस कालखण्ड में न वकील, न अपील, न दलील वाला काला बिल रोलेट एक्ट पास हुआ था। इसके विरोध में गांधी जी ने दमनकारी कानूनों की अवज्ञा करने के संकल्प के साथ सत्याग्रह सभा शुरू की। सारे देश में 6 अप्रैल 1919 को आम हड़ताल का आह्वान किया गया। इसके बाद नागरिक अवज्ञा शुरू होने वाली थी। 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग की दुखद दुर्घटना घटी। अवज्ञापूर्वक एकत्रित हुई जनता पर जनरल डायर ने सारे पंजाब में आतंक फैलाने की इच्छा से बिना किसी चेतावनी के निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया। इस हत्याकाण्ड का उद्देश्य समस्त भारतीय जनता को आतंकित करना था। और 31 दिसंबर 1929 को रावी के तट पर जनता की एक अपार भीड़ ने जवाहर लाल नेहरू को राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को फहराते हुए देखा। लेखक ने उस समय की मनोदशा को उद्धृत किया है–उसी समय के प्रेमचंद गोरखपुर उपवास के दौरान कुर्सी पर लेटे अखबार पढ़ रहे थे। इंस्पेक्टर की मोटर कार वहाँ से निकली प्रेमचंद उठे नही। बुलाये जाने पर– आपने मुझे क्यों याद किया? तुम्हारी गाय मेरे हाते में आई। मै उसे गोली मार देता। ''साहब आपको गोली मारनी थी तो मुझे क्यों बुलाया आप गोली मार दीजिए पर मुझे मत बुलाइएगा।'' प्रेमचंद के स्वाभीमान की यह एक बानगी है। आत्मसम्मान, दर्पा और गर्व, जो इस वार्तालाप में है वह प्रेमचंद की ओजस्वी चेतना का आधार है।

समीक्षक के अनुसार प्रेमचंद का प्रेमाश्रम जब आया तब सरस्वती और मर्यादा धूमधाम से निकल रही थी। प्रेमाश्रम में किसानों के जीवन का वर्णन कम और दूसरे वर्गों के साथ उनके संबंध कैसे है इसका वर्णन ज्यादा है। प्रेमाश्रम में उठान जितना जबरदस्त है अंत उतना ही कमजोर। अंग्रेजी राज किसानों का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रेमचंद इसे दिखा नहीं पाते। असहयोग आंदोलन की समाप्ति की अवधी में प्रेमचंद साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो गये थे उपन्यास सम्राट बन गये थे। उनमें अपने कलम के प्रति अतिरिक्त आत्मविश्वास बढ़ा जिससे असावधानी भी आई और रचनात्मक शैथिल्य की मात्रा भी बढ़ी। सवा सेर गेहूँ के बाद तीन चार वर्षों तक प्रेमचंद की कला में रास हुआ है। रंगभूमि की तुलना में कायाकल्प उनकी कमजोर रचना है। 1929 में प्रेमचंद और कृष्णबिहारी मिश्र माधुरी के सम्पादक बने आलोचक के अनुसार अन्य सामाजिक साहित्यिक और सांस्कृतिक

विषयों में प्रेमचंद कोई परिवर्तन नही कर सकें। पर उसे साम्प्रदायिकता विरोधी पत्रिका जरूर बना दिया।

चिन्तन की परिपक्वता और स्वाधीनता आंदोलन की भूमिका के अंतर्गत रामबक्ष जी ने 1930 से 1936 तक का समय लिया है। इस अवधि की राष्ट्रीय घटनाओं में नागरिक अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह, चन्द्रशेखर आजाद की वीरगति, गांधी इरविन समझौता, भगत सिंह सुखदेव और राजगुरू को फांसी, दूसरा गोलमेज सम्मेलन आदि प्रमुख घटनाएं रहीं। इस परिवेश में प्रेमचंद की रचना धर्मिता के प्रभावी कारकों की पहचान करते हुए आलोचक रामबक्ष ने रेखांकित किया है–''प्रेमचंद में भी उत्साह आया और उन्होंने मार्च 1930 से हंस नामक मासिक पत्र निकालना शुरू किया। इसका उद्देश्य था–स्वाधीनता आंदोलन में सहयोग। वास्तव में इस आंदोलन से प्रेमचंद की मन्थरता टूटी और उनके साहित्य में तेजस्वी चिंतन की धारा बही। प्रेमचंद के रचना मानस की पड़ताल करते हुए आलोचक कहता है कि प्रेमचंद का दिहाती मन आदर्शवादी है शहरी मन यर्थार्थवादी है। आदर्शवादी मन ने सूरदास, सुजान भगत और होरी की रचना की है। यथार्थवादी मानस ने ज्ञान शंकर जान सेवक, राय साहब और मिस्टर खन्ना को चित्रित किया है। देहाती मन शांतिप्रिय, व्यवस्थाप्रिय और सामाजिक है। शहरी मानस तनाव भरा विद्रोही और राजनीतिक है। चिंतन की परिपक्वता शीर्षक के अंतर्गत रामबक्ष कहते हैं–''वास्तव में प्रेमचंद ने साहित्य के विषय की प्रजातांत्रिकता का पक्ष लिया है।

सर्जनात्मक उत्कर्ष और किसानी जीवन की जटिलता में अंतः प्रवेश नामक शीर्षक ने लेखक ने 1930–1936 तक का कालखण्ड लिया है। गबन उपन्यास के अंत में प्रेमचंद ने शहर बनाम गांव के द्वन्द को सामने रखा और दिखाया कि चैन की जिंदगी सिर्फ गांव में ही बिताई जा सकती है। कर्मभूमि प्रेमंचन्द का बहुत ही कमजोर उपन्यास जिसमें नवीन कल्पना और मौलिकता का अभाव है। फिर भी देश प्रेम, इतिहास चेतना और आशावाद उपन्यास के मूल में है। गोदान उपन्यास में किसान का सहज सरल आंतरिक जीवन जैसा कि वह है सामने रखने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास की धुरी किसान का जीवन है। जिसको प्रेमचन्द ने इतनी तन्मयता और सावधानी से बुना है कि भारतीय किसान की सूक्ष्म जानकारी रखने वाले पाठक को भी सुखद आश्चर्य होता है। वास्तव में होरी समस्त भारतीय किसानों का प्रतिनिधि नही है बल्कि ऐतिहासिक दौर में लुप्त होता हुआ मिटता हुआ भारतीय किसान है उसकी ट्रेजडी अनिवार्य है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद का साहित्य जनतांत्रिक भाव बोध पर टिका हुआ है। जहाँ सभी मनुष्य बराबर हैं। एक के द्वारा दूसरे का शोषण गलत है अवैध है। स्पष्ट है आलोचक रामबक्ष ने प्रेमचंद के रचनाओं की तत्वदर्शी विवेचना करते हुए जो निष्कर्ष दिये हैं। उसे प्रेमचंद के अध्ययनकर्ताओं को नवीन संदर्भ मिलते रहेंगे।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. *प्रेमचंद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।*
2. *स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।*
3. *गांधी जी और स्वाधीनता आंदोलन– जवाहरलाल नेहरू।*
4. *आज का भारत– रजनी पापदत्त, आठवां संस्करण मेकमिलन पब्लिशर इण्डिया लिमिटेड।*
5. *कलम का मजदूर– प्रेमचंद, मदन गोपाल, वर्ष 2016 राजकमल प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली।*
6. *समालोचक–उपन्यास शीर्षक लेख।*
7. *समीक्ष्यकृति–प्रो0 रामबृक्ष वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।*